ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
ISSN No.: 2347-2944, RNI:UPBIL04292, REG. No.: 561/2013-2014 Vol.-2, No.-2, **PP-53-54**,YEAR-2015

स्वर्णिम भारत के पुनर्निर्माण में आचार्य विनोबा का योगदान

❑ **सन्दीप ठाकरे**

सारांश– *प्रत्येक पुरुष के आविर्भाव का परमात्मा एक प्रयोजन निर्धारित करता है। आचार्य विनोबा भावे का अवतरण भी स्वर्णिम भारत के पुनर्निर्माण में महत्वपूर्ण रहा है। विनोबा जी एक नया मानव निर्माण का सन्देश लेकर अवतरित हुए थे। विनोबा जी भारत के साथ–साथ सम्पूर्ण विश्व के कल्याण के विषय में गहरा चिन्तन करते थे। विनोबा जी का जीवन दर्शन कोरा तात्विक चिन्तन नहीं है, अपितु मानव जीवन की पृष्ठ भूमि पर किए गए सफल प्रयोग का तर्क सिद्ध निष्कर्ष है। उनका यह दर्शन जीवन पद्धति का व्यावहारिक स्वरूप है। उनके जीवन दर्शन का प्रमुख लक्ष्य है, ब्रह्मविद्या की खोज अर्थात् सत्य की स्वानुभूति करना है। सत्य दार्शनिकों के लिए सर्वदा सवार्धिक जटिल विषय रहा है। इस की सिद्धि के लिए शंकराचार्य ने अद्वैत मार्ग को चुना, भगवान् बुद्ध ने मध्यम मार्ग को अपनाया, स्वामी महावीर ने अनेकान्त पद्धति को प्राथमिकता दी थी। उसी सत्य के साक्षात्कार हेतु विनोबा ने गीता का ज्ञान, गाँधी दर्शन, सत्य, प्रेम, करुणा और अहिंसा को साधन माना । विनोबा पर गीता और गाँधी दर्शन का सार्वधिक प्रभाव रहा है। उनके विचारों में मौलिकता भी रही है। गाँधी दर्शन का प्रभाव होते हुए भी विनोबा का व्यक्तित्व हमेशा अध्ययनशील, सीखने और सिखाने की प्रवृत्ति का रहा है। प्रतिदिन कुछ न कुछ नया सीखना, उनका विशेष गुण रहा है। विनोबा के विचारों में हमें गीता जैसी सन्तुलित विचारधारा के दर्शन होते हैं। जिस प्रकार श्रीमद्भगवद् गीता में ज्ञान, कर्म और भक्तियोग का सम्यक् विवेचन है ठीक उसी प्रकार ज्ञान, कर्म और भक्ति योग का स्थान विनोबा जी के सम्पूर्ण जीवन में देखने को मिलता है।*

उपर्युक्त पंक्तियों में हम स्पष्ट कर चुके हैं कि विनोबा एक नया मानव निर्माण का सन्देश लेकर अवतरित हुए थे। आज हम देखते हैं कि हमारे सामने ऐसे छोटे–छोटे मानव खड़े हैं जिन पर जाति, भाषा, प्रान्त, पन्थ एवं राष्ट्र के लेवल लगे हुए हैं। राष्ट्रवाद का कुत्सित और गर्हित स्वरूप हमें समाज के विभिन्न वर्गों में देखने को मिलता है। ऐसे समय में विनोबा जी ने सबको जय जगत् का मन्त्र दिया था। वे कहते हैं कि धीरे–धीरे देश की सरहदें टूटने वाली हैं। विनोबा कहते हैं कि आज हमें यह कामना नहीं करनी चाहिए कि हमारे देश की जय हो और दूसरे देश की हार। बल्कि आज हमें ऐसी भावना करनी चाहिए कि हमारे देश के साथ–साथ दूसरे देशों का भी भला हो अर्थात् सबका भला हो। अब हम देखेंगे कि विनोबा का आचार–विचार, त्याग, तपस्या, ज्ञान, कर्म, भक्ति और दर्शन का स्वर्णिम भारत के निर्माण में किस प्रकार का सहयोग रहा है। विनोबा जी ने अपने आपको साम्ययोग का साधक बताया था। साम्य ही विनोबा जी के चिन्तन और जीवन का सार सर्वस्व रहा है। इसीलिए उन्होंने गीता को न ज्ञान योग, न कर्मयोग, न भक्ति योग न अनासक्ति योग कहा, बल्कि उसे साम्य योग ही बताया था। जिस की पुष्टि श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान् कृष्ण के उपदेश से होती है, जिसमें उन्होंने अर्जुन से मन को साम्य स्थिति मे रखने को कहा था –

आत्मौपम्येन सर्वत्र समं पश्यति योऽर्जुन।
सुखं वा यदि वा दुःखं स योगी परमो मतः।।[1]
योऽयं योगस्त्वया प्रोक्तः साम्येन मधुसूदन।
एतस्याहं न पश्यामि चंचलत्वात्स्थितिं स्थिराम्।।[1]

अर्थात् हे अर्जुन! अपने समान सर्वत्र समतायुक्त होकर जो सुख अथवा दुःख में भी सम रहता है वह मुझे परम

शोध छात्र,म.गा.चि.ग्रा.वि.वि.चित्रकूट, सतना, (म.प्र.) भारत

योगी मान्य है। इस पर अर्जुन ने प्रश्न किया कि हे मधुसूदन ! यह जो साम्य शब्द के द्वारा आपने योग कहा है, उस में मन की चंचलता के कारण मैं स्थिर स्थिति को नहीं देख रहा हूँ। इस पर श्रीकृष्ण ने पर्याप्त लम्बा उपदेश साम्ययोग में स्थिति के लिए किया है, जिस के प्रमुख साधन अभ्यास और वैराग्य को बताया है। ये दोनों ही साधन विनोबा जी के जीवन का सार थे। गीता के इसी साम्य योग को धारण करने का प्रयास विनोबा जी जीवन भर करते रहे थे। अभ्यास और वैराग्य उन के जीवन के अभिन्न अंग थे। सामाजिक साम्य के आधार पर सामाजिक पुनर्रचना तथा व्यक्तिगत जीवन में साम्य से पारिवारिक और निज जीवन शान्त और सुखी बनता है। मानसिक साम्य से मनुष्य के मन का सन्तुलन और नियन्त्रण ठीक प्रकार से होता है। परन्तु इन तीनों साम्यों से परे एक साम्य है जिस में अन्य सभी साम्य समाविष्ट हो जाते हैं जिसे विनोबा जी ने परम साम्य का नाम दिया था। इस प्रकार साम्य योग आज के समय की आवश्यकता है। वस्तुतः यह मानव की भूख और प्यास है। आज चाहे समाज नीति हो, अर्थ नीति हो, या मोक्ष नीति सब जगह साम्य के मूल्य को स्वीकार करना पड़ेगा ऐसा विनोबा जी बार–बार सम्बोधन करते थे।[3] इस प्रकार विनोबा साम्य को जीवन मूल्य मानते थे । विनोबा जी पर गीता और गाँधी दर्शन का सर्वाधिक प्रभाव रहा है इसका उल्लेख हम कर चुके हैं। विनोबा जी भी गाँधी जी की तरह अहिंसक संत थे। ज्ञान, कर्म और भक्ति, सत्य, प्रेम, करुणा द्वारा उन्होंने समाज में उत्पन्न भौतिकता के सम्मोहन को दूर करने का सफल प्रयास किया था। उन के सम्पर्क में आने वाले हर व्यक्ति पर उनके सिद्धान्तों और चिन्तन धारा की स्पष्ट छाप देखी जा सकती है। गाँधी जी की भाँति बिनोबा जी का भी विचार सादा जीवन उच्च विचार की उक्ति का अनुसरण करने का रहा है । विनोबा जी ने असत्य को सत्य से, अज्ञान को ज्ञान से, हिंसा को अहिंसा से जीतने का मन्त्र दिया था। इन सभी बातों का प्रत्यक्ष दर्शन हमें उनकी जीवन यात्रा में देखने को मिलता है। मानव कल्याण एवं सेवा में वे सत्य का दर्शन करते थे। वे निरन्तर सत्यान्वेषी थे। उनका सम्पूर्ण जीवन एक निष्काम कर्म योगी की तरह रहा है। भूदान यात्रा के समय उनकी दिनचर्या ठीक भगवान सूर्य नारायण के समान थी। प्रत्येक कार्य उचित समय पर पूर्ण होता था। सम्पूर्ण देश में चौदह वर्ष तक भूदान महायज्ञ की आहुति दी जाती रही जिस से कोटि लोगों का कल्याण होता रहा। इस भूदान यात्रा में विनोबा जी के प्रवचन अर्थात् ज्ञान यज्ञ का प्रभाव भारत की जनता अनुभव कर रही थी। यह भूदान आन्दोलन एक अहिंसक जनक्रान्ति थी। विनोबा जी ने सत्य, प्रेम और करुणा के द्वारा भूदान में लाखों एकड़ जमीन एकत्रित कर भूमिहीनों में बांटी थी। क्योंकि विनोबा जी '' सबै भूमि गोपाल की' ' की उक्ति पर विश्वास करते थे। इसी प्रकार भूदान आन्दोलन से लोगों में अहिंसक क्रान्ति का एक नया विचार जन्म ले चुका था। इस सम्पूर्ण भूदान यात्रा के समय विनोबा जी की ज्ञान, कर्म और भक्ति योग की साधना निरन्तर चलती रही थी जो स्वर्णिम भारत के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसप्रकार उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि विनोबा जी का स्वर्णिम भारत के पुर्ननिर्माण में अतुलनीय योग दान था।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. श्रीमद्भगवद् गीता श्लोक क्रमांक 32, अध्याय 6
2. श्रीमद्भगवद् गीता श्लोक क्रमांक 33, अध्याय 6
3. गाँधी विचार (पृष्ठ संख्या 239)

*****